

Padma Shri



SMT. GADDAM PADMAJA REDDY

Smt. Gaddam Padmaja Reddy, is an internationally renowned Kuchipudi dancer, who has been performing for over fifty years. It was under the tutelage of the renowned Kuchipudi exponents Dr. Vempati Chinna Satyam (Padma Bhushan Awardee) and Dr. Sobha Naidu (Padmashree Awardee) that her real passion for Kuchipudi was kindled.

2. Born on 1st January, 1967, Dr. Reddy is a committed Artist, Guru, choreographer. She works relentlessly to promote and bring awareness to this great Indian dance form Kuchipudi. In a spectacular career that has spanned over 5 decades, she has given over 3000 performances in India and various parts of the world. Hailed as one of the most talented Kuchipudi dancers by critics and connoisseurs alike, she is most famous for portrayal of Satyabhama and Rani Rudhrama Devi. A deep love for Kuchipudi and a fiery zeal to preserve and promote this classical dance form has led her to start "Pranav Institute of Kuchipudi Dance". Under her guidance, over 1500 students are being trained at this Institute.

3. With a strong urge to rid the society of its many evils, Dr. Reddy composed many Kuchipudi ballets that carry a social message. Bruna Hathyalu (a powerful Kuchipudi ballet that condemns female foeticide), Jagruthi (ballet that addresses various issues regarding AIDS), Vajra Bharathi (Ballet composed as an effort to kindle the spirit of national integration among people). Her ballets deal with various subjects ranging from contemporary social issues to mythology, Gods and Goddesses. Some of her famous mythological ballets include Mahishashura Mardhini, Navadurgalu, Kakatiyam - Part I and Part II.

4. Dr. Reddy is a general assembly member of Indian Council for Cultural Relation (ICCR, Delhi) and served as an advisor to National Tourism Advisory Council (NTAC) member, Department of Tourism, Government of India. "Kakatiyam" is a commendable initiative and a milestone achievement of her life. She introduced a new art form "Kakatiyam" to the people of Telangana, which otherwise would have remained in the books but for her efforts. She has converted the theoretical dance concepts (detailed in the book Jaayana Charyulu's "Nritta Ratnavali") into a visual art form which made the audience understand and visualize the dance forms which once existed in the 1253 AD. With a creative and innovative choreography, she has reconstructed the dance concepts detailed in the "Nritta Ratnavali" interwoven with some interesting episodes from history. She has started a unique initiative to spread Kuchipudi. She is the first Kuchipudi dancer in India to teach this dance form through the Internet. She has written Kuchipudi sampradaya, a theoretical insight and syllabus for Certificate Course book. This book provides deep insights for students learning Kuchipudi dance. It has detailed explanation of theory and practical details for the young dancers who are appearing for certificate course examinations.

5. Dr. Reddy's performances and services to the classical dance have been recognized by various organizations. The President of India has conferred her with "Sangeet Natak Akademi Award - 2015". "KALARATNA (HAMSA) 2006" from State Government of Andhra Pradesh; "NATYA VISHARADHA 1994" by His EXCELLENCY Shri Shankar Dayal Sharma, former President of India; "KALKI KALAKAR 1990"; "ABHINAYA SATYABHAMA & SAMSKRUTI RATNA" and many more awards and rewards have been received by her. She has been also honored with D.Lit Degree by Sri Krishna Devarya University in 2005.

पद्म श्री



श्रीमती गदाम पञ्चजा रेड्डी

श्रीमती गदाम पञ्चजा रेड्डी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात कुचिपुड़ी नृत्यांगना हैं, जो पचास सालों से अधिक समय से प्रस्तुति दे रही हैं। प्रसिद्ध कुचिपुड़ी गुरुओं डॉ. वेंपति चिन्ना सत्यम (पद्म भूषण पुरस्कार विजेता) और डॉ. शोभा नायडू (पद्मश्री पुरस्कार विजेता) की शार्गिदी ने कुचिपुड़ी के लिए उनमें असल जुनून पैदा किया।

2. 1 जनवरी 1967 को जन्मी, डॉ. रेड्डी एक लगनशील कलाकार, गुरु और कोरियोग्राफर हैं। वे इस महान भारतीय नृत्य रूप कुचिपुड़ी को बढ़ावा देने और उसके बारे में जागरूकता लाने के लिए अथक प्रयास कर रही हैं। 5 दशकों से अधिक के शानदार करियर में, उन्होंने भारत और दुनिया के तमाम हिस्सों में 3000 से अधिक प्रस्तुतियां दी हैं। आलोचकों और पारखियों द्वारा एक समान रूप से सबसे प्रतिभाशाली कुचिपुड़ी नर्तकियों में शुमार, वे सत्यभामा और रानी रुद्रमा देवी के चित्रण के लिए सबसे प्रसिद्ध हैं। कुचिपुड़ी के लिए गहरे प्यार और इस शास्त्रीय नृत्य रूप को संरक्षित करने और बढ़ावा देने के जोश ने उन्हें "प्रणव इंस्टीट्यूट ऑफ कुचिपुड़ी डांस" शुरू करने के लिए प्रेरित किया। उनके मार्गदर्शन में, इस संस्थान में 1500 से अधिक विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

3. समाज को कई बुराइयों से मुक्त करने की तीव्र इच्छा के साथ, डॉ. रेड्डी ने सामाजिक संदेश देने वाले कई कुचिपुड़ी बैले की रचना की ब्रुना हथ्यालु (एक शक्तिशाली कुचिपुड़ी बैले जो कन्या भ्रूण हत्या की निंदा करता है), जागृति (एड्स से जुड़े कई मुद्दों की बात करने वाला बैले), वज्र भारती (लोगों के बीच राष्ट्रीय एकता की भावना को जगाने की कोशिश के रूप में रचित बैले)। उनके बैले समकालीन सामाजिक मुद्दों से लेकर पौराणिक कथाओं, देवी-देवताओं तक तमाम विषयों पर हैं। उनके कुछ प्रसिद्ध पौराणिक बैले में महिषासुरमर्दिनी, नवदुर्गालु, काकतीयम – भाग I और भाग II शामिल हैं।

4. डॉ. रेड्डी इंडियन काउंसिल फॉर कल्चरल रिलेशन (आईसीसीआर, दिल्ली) की आम सभा की सदस्य हैं और उन्होंने नेशनल टूरिज्म एडवाइजरी काउंसिल (एनटीएसी) सदस्य, पर्यटन विभाग, भारत सरकार के सलाहकार के रूप में काम किया है। "काकतीयम" – एक सराहनीय पहल और उनके जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। उन्होंने तेलंगाना के लोगों के लिए एक नया कला रूप "काकतीयम" पेश किया, जो उनकी कोशिशों के बिना किताबों में ही रहता। उन्होंने सैद्धांतिक नृत्य अवधारणाओं (जयना चार्युलु की "नृत्य रत्नावली" पुस्तक में वर्णित) को एक दृश्य कला रूप में बदल दिया, जिससे दर्शकों को उन नृत्य रूपों को समझने और उनकी कल्पना करने के लिए प्रेरित किया, जो कभी 1253 ई. में मौजूद थे। एक रचनात्मक और अभिनव कोरियोग्राफी के साथ, उन्होंने "नृत्य रत्नावली" में दी गई नृत्य अवधारणाओं को इतिहास के कुछ दिलचस्प प्रसंगों के साथ गूंथकर उनका पुनर्निर्माण किया है। उन्होंने कुचिपुड़ी के प्रसार के लिए अनूठी पहल शुरू की है। वे इंटरनेट के माध्यम से इस नृत्य शैली को सिखाने वाली भारत की पहली कुचिपुड़ी नर्तकी हैं। उन्होंने एक सैद्धांतिक अंतर्दृष्टि और सर्टिफिकेट कोर्स बुक का पाठ्यक्रम, कुचिपुड़ी संप्रदाय लिखा है। यह पुस्तक कुचिपुड़ी नृत्य सीखने वाले विद्यार्थियों को गहन ज्ञान प्रदान करती है। इसमें सर्टिफिकेट कोर्स की परीक्षाओं में शामिल होने वाले युवा नर्तक-नर्तकियों के लिए सैद्धांतिक और व्यावहारिक विवरण की विस्तृत व्याख्या है।

5. डॉ. रेड्डी की प्रस्तुतियों और शास्त्रीय नृत्य के लिए उनकी सेवाओं को कई संगठनों ने मान्यता दी है। भारत के राष्ट्रपति ने उन्हें "संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार – 2015" प्रदान किया। आंध्र प्रदेश सरकार से "कलारत्न (हमसा) 2006"; भारत के पूर्व राष्ट्रपति महामहिम श्री शंकर दयाल शर्मा द्वारा "नाट्य विशारद 1994"; "कल्कि कलाकार 1990"; "अभिनय सत्यभामा और संस्कृति रत्न" तथा और भी कई पुरस्कार उन्हें मिल चुके हैं। उन्हें 2005 में श्रीकृष्ण देवरिया विश्वविद्यालय द्वारा डी.लिट डिग्री भी प्रदान की गई।